International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 16-10-2021, Accepted: 01-11-2021, Published: 17-11-2021
Volume 7; Issue 6; 2021; Page No. 18-24

भारत में धार्मिक पर्यटन– अतीत, वर्तमान और भविष्य

डॉ. सुरभि सिंह
Dean, Department of Arts, Sarvepalli Radhakrishnan University Bhopal, Madhaya Pradesh, India

सारांश
प्राचीन समय में लोग खाना खोजने, खोज व व्यापार करने के लिए यात्रा किया करते थे। कुछ समय बाद छुट्टियों का समय बिताने के लिए पूरे ग्रह पर यात्राऐं होने लगीं। तकनीकी विकास ने यात्राओं को अधिक आसान, सुविधापूर्ण व पहले से काफी तीव्र (कम समय लेने वाला) बना दिया है। भारत में यात्राओं व पर्यटन का बडा ही पुराना इतिहास रहा है। सदियों से तीर्थाटन के लिए, फिर रेशम व मसालों के व्यापार के लिए, आगे चलकर ब्रिटिश साम्राज्य में हिल स्टेशनों के विकास के बाद यात्राऐं बढती ही चली गईं। पर्यटन वर्तमान समय में एक नई ऊर्जा के रुप में आर्थिक जगत में उभर कर आया है। पर्यटन को दुनिया में शीघ्रता से बढता हुआ उद्योग समझा जा रहा है। हमारे ऋषि–मुनि मानवी मनोविज्ञान के कुशल मर्मज्ञ अर्थात जानकार होते थे। प्राचीन ऋषि–मुनि लिबास से भले ही साधु–संत थे, किंतु सोच और कार्यशैली से पूरी तरह से वैज्ञानिक थे। दुनिया को मोक्ष का मार्ग वैदिक ऋषियों ने ही बताया। दुनिया के किसी भी धर्म की अंतिम मान्यता यही है कि आत्मज्ञान या पूर्णता की प्राप्ति ही इंसानी जिंदगी का एकमात्र अंतिम ध्येय है। धरती पर पहली बार वैदिक ऋषियों ने धर्म को एक व्यवस्था दी और वैज्ञानिक विधि–विधान निर्मित किए। दुनिया के बाद के धर्मों ने उनकी ही व्यवस्था और धार्मिक विधि–विधान को अपनाया। उन्होंने संध्यावंदन, व्रत, वेदपाठ, तीर्थ, 24 संस्कार, उत्सव, यम–नियम, ध्यान आदि को निर्मित किया और इसे धर्म का आधार स्तंभ बनाया। उनके ही बनाए संस्कारों और नियमों को आज सभी धर्म के लोग अपना रहे हैं। धर्म के इन्हीं नियमों में से एक है– धार्मिक पर्यटन अथवा तीर्थयात्रा। इसीलिए प्रस्तुत शोधपत्र में शोधकर्ता द्वारा भारत में धार्मिक पर्यटन– अतीत, वर्तमान और भविष्य का अध्ययन किया गया है।

मूलशब्द: धार्मिक पर्यटन, स्थानीय समुदाय, नीति, संस्थागत ढांचा

प्रस्तावना
आरम्भिक काल से ही मनुष्य भोजन और निवास की खोज में अपनी आवश्यकताओं तथा आवेगों की संतुश्टि हेतु विचरण करता रहा है। पर्यटन व गमनागमन का उतना ही पुराना इतिहास रहा है जितनी पुरानी मानव जाति स्वयं है (निकरसन एवं कैर 1998)। प्राचीन समय में यात्राओं का मुख्य ध्येय व्यापार ही हुआ करता था। समय परिवर्तन के साथ साथ यात्राओं के उद्देश्य साम्राज्य विस्तार, धार्मिक, सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, मनोरंजनात्मक, शैक्षिक आदि में बदलते रहें।वर्तमान समय में मानव बेहतर व सुख सुविधापूर्ण जीवन जीने की चाह में अधिकतम व्यस्त होता जा रहा है। व्यस्तता व चिन्ता मानव जीवन का अंग बनती जा रही है, जिस कारण मानव स्वास्थ्य में गिरावट देखने को मिल रही है। मानव की स्वास्थ्य के प्रति चिन्ता ही मानव को प्रकृति के करीब ले जाती है, मानव की यही घुमन्तु प्रवृति ही पर्यटन को प्रोत्साहित व विकसित करती है। भारत में हिमालय भी प्राकृतिक सौन्दर्य से भरपूर एक ऐसा ही मनोहारी क्षेत्र है जहाँ अनेकों पर्यटक देश–विदेश से प्रकृति के अद्भुद रुप का आनन्द लेने आते ही रहते हैं। धार्मिक पर्यटन को धार्मिक उद्देश्यों के लिए अन्य शहरों या देशों की यात्रा की योजना के रूप में माना जाता है। धार्मिक पर्यटन आजकल बढ़ता जा रहा है। व्यापक रूप से भारत धार्मिक स्थलों के लिए जाना जाता है। धार्मिक पर्यटन भारत के विकास का एक कारण रहा है। केदारनाथ, महाकालेश्वर, जगन्नाथ पुरी, तिरुपति, गंगोत्री, यमुनोत्री, बद्रीनाथ, ओंकारेश्वर, काशी विश्वनाथ आदि जैसे कई स्थान भारत में सबसे अधिक प्रसिद्ध धार्मिक स्थल हैं।
यहां तक कि विदेशी भी इन जगहों को देखने भारत आते हैं। सरकार न केवल एक आर्थिक प्रवर्तक के रूप में, बल्कि सामुदायिक सहमति सुनिश्चित करने के लिए एक उपकरण के रूप में धार्मिक पर्यटन के महत्व के बारे में बहुत जागरूक है। धार्मिक पर्यटन भारत को विकसित करने के लिए सबसे मजबूत इकाइयों में से एक है।
पर्यटन बुनियादी ढांचागत सुविधाओं के विकास को सुगम बनाने में एक प्रमुख सशक्तिकरण के रूप में कार्य करता है, स्थानीय समुदाय के साथ–साथ सरकार के लिए आय उत्पन्न करता है और शांति और सामाजिक–सांस्कृतिक सहयोग को प्रोत्साहित करता है। लेकिन धार्मिक पर्यटन को विकसित करने के लिए सरकार के सामने कुछ चुनौतियां हैं। देश में धार्मिक पर्यटन के विकास को कुछ मुद्दों या नकारात्मक प्रभावों का सामना भी करना पड़ा है। उत्तराखंड में चार धाम यात्रा सबसे अच्छे उदाहरणों में से एक है। लेकिन इसके साथ ही साथ धार्मिक पर्यटन के विकास को प्रोत्साहित करने के लिए अच्छे प्रबंधन और उचित संस्थागत ढांचे के विकास के माध्यम से धार्मिक पर्यटन के सभी नकारात्मक प्रभावों को रोकना या कम करना पड़ेगा । भारत में आधुनिक काल में धार्मिक पर्यटन का तेजी से विकास हुआ है। वर्ल्ड इकोनॉमिक फोरम के अनुसार, भारत के रोजगार में यात्रा और पर्यटन का 5 प्रतिशत हिस्सा है।
इसमें आगे के विकास की भी बड़ी संभावना है, यह देश के लाखों अंतरराष्ट्रीय आगंतुकों की तुलना चीन के 55 मिलियन से करने पर दिखाई देता है। विविध संसाधन चाहे वह सांस्कृतिक हो, या प्राकृतिक या अमूर्त विरासत या फिर खेल आयोजन, राष्ट्र के सामाजिक–आर्थिक विकास में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है। आर्थिक विकास के साथ–साथ व्यापार यात्रा गंतव्य के रूप में भारत की प्रासंगिकता बढ़ रही है, यह एक मूल्य–प्रतिस्पर्धी गंतव्य (8वां) बना हुआ है और इसके वीजा व्यवस्था में हाल के बदलाव डेटा रैंकिंग में अभी तक प्रतिबिंबित नहीं हुए हैं–अंतर्राष्ट्रीय आगमन को बढ़ावा देने की क्षमता रखते हैं। भारत वास्तव में एक विशिष्ट देश है जिसमें पर्यटकों के लिए बहुत कुछ है। भारत की समृद्ध संस्कृति, विरासत, सुंदरता और इतिहास हर साल भारत की यात्रा करने के लिए बहुत सारे पर्यटकों को मंत्रमुग्ध कर देता है। भारत एक बड़ा देश है जहां यात्रा करने के लिए पर्याप्त गंतव्य हैं। धार्मिक पर्यटन भारत में समाज की संरचना है और धार्मिक संस्कृति, विरासत और सिद्धांतों का क्रम नीति, प्रबंधन और विकास के उद्देश्यों का समर्थन करता है। भारत प्रत्येक तीर्थयात्रा भी एक लंबे इतिहास के साथ भारतीय ऐतिहासिक संस्कृति की एक लोकप्रिय विशेषता है। भारतीय धार्मिक पर्यटन क्षमताएं देश के विकास के लिए प्रमुख स्रोतों में से एक रही हैं, विशेष रूप से भारत में कई धार्मिक पर्यटन स्थलों की उपस्थिति के कारण स्थानीय संसाधनों का आर्थिक, पर्यावरण और सामाजिक विकास है।

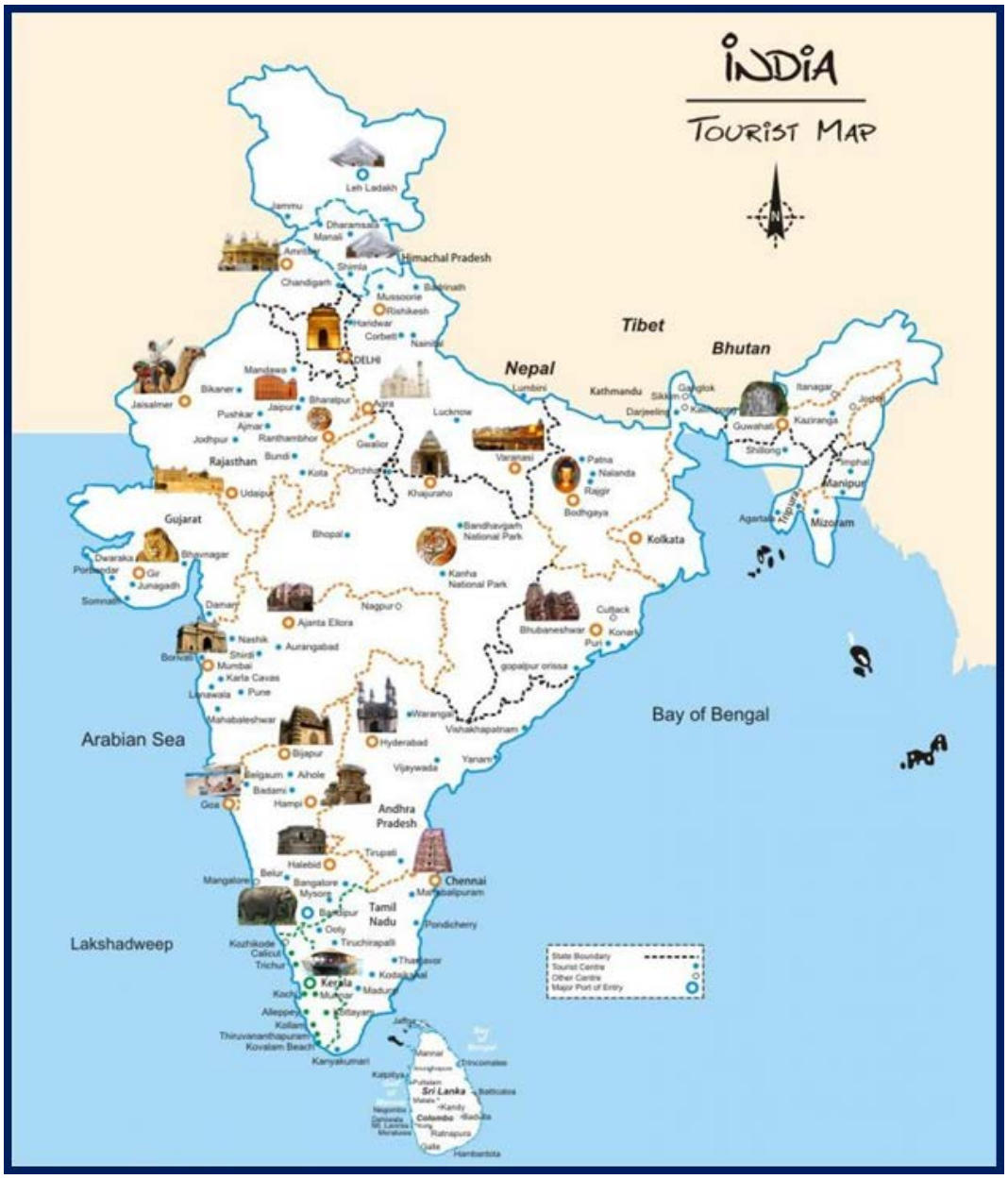

INDIA
TOURIST MAP
Tibet
Nepal
Bhutan
Arabian Sea
Bay of Bengal
Lakshadweep
Rajasthan
Gujarat
Andhra Pradesh
Tamil Nadu
Himachal Pradesh

चित्र 1

प्रमुख पर्यटन या दर्शनीय स्थल

चित्र 2

चित्र 3

चित्र 4

भारत में यह धार्मिक पर्यटन और तीर्थ पर्यटन को दर्शाता है, राजस्व में विविधता लाने के अवसर प्रदान करता है भारत प्राचीन संस्कृति, 50 धार्मिक और 845 भाषाओं, 3 लाख से अधिक देवी–देवताओं और ऐतिहासिक स्मारकों की मजबूत नींव रखता है। भारत में धार्मिक पर्यटन के दो अलग पहलू हैं। एक, घरेलू पर्यटक का विश्वास, जिसे देवत्वध्धार्मिक विश्वासों से आध्यात्मिक लगाव हैय दूसरा विदेशी पर्यटक है, जो किसी भिन्न धर्म, स्थान या देश से संबंधित है, जिसके लिए गंतव्य और धार्मिक प्रथाओं में श्नयापनश का पहलू है, एक आध्यात्मिक अनुभव जो अपने आप से अलग है, फिर भी नैतिक मूल्यों को वितरित किया जा रहा है वही रह गया है। पर्यटन के बुनियादी ढांचे के निर्माण के लिए, दो प्रमुख योजनाएं लागू की गई हैं – स्वदेश दर्शन (थीम–आधारित पर्यटक सर्किट का एकीकृत विकास) और प्रसाद (तीर्थयात्रा कायाकल्प और आध्यात्मिक वृद्धि अभियान)।

तीर्थयात्रा (च्यसहतपउंहम) अर्थात धार्मिक और आध्यात्मिक महत्त्व वाले स्थानों की यात्रा करना। विश्व में अधिकांश लोग तीर्थ स्थानों पर जाने के लिए अक्सर लम्बी और कष्टदायक यात्राएँ करते हैं। इन यात्राओं को तीर्थयात्रा कहते हैं। हिन्दू धर्म के तीर्थ प्रायः देवताओं के निवास–स्थान होते हैं। मुसलमानों के लिए मक्का और मदीना महत्त्वपूर्ण तीर्थ हैं और इन जगहों पर जीवन में एक बार जाना हर मुसलमान के लिए आवश्यक कहा गया है। हिन्दुओं में माता वैष्णों के दर्शन हेतु की जाने वाली यात्रा, अमरनाथ जी की यात्रा, मथुरा की प्रसिद्ध ब्रज चौरासी कोस की यात्रा तथा महाराष्ट्र में पण्ढरपुर की यात्रा भी महत्त्वपूर्ण तीर्थयात्राएँ हैं।

अध्ययन का उद्देश्य (Objective)

भारत में धार्मिक पर्यटन के अतीत, वर्तमान और भविष्य का अध्ययन करना

साहित्य की समीक्षा (Review of Litrature)

जेकेशर्मा 2000 ने अपनी पुस्तक ष्पर्यटन योजना और विकासरू एक नया परिप्रेक्ष्यष में पर्यटन के प्रभावी प्रबंधन के लिए पर्यटन में सेवा की गुणवत्ता में एक एकीकृत दृष्टिकोण और वृद्धिशील वृद्धि पर जोर दिया है। उन्होंने कहा है कि परिवहन, सेवाएं, सूचना और प्रचार, भौतिक पर्यावरण और पर्यटन संगठन किसी विशेष क्षेत्र में पर्यटन की योजना बनाने और विकसित करने के लिए बुनियादी घटक हैं। उन्होंने एक वैकल्पिक योजना और विकास प्रक्रिया पेश करने का प्रयास किया है जो पर्यटन के लिए टिकाऊ है और सतत विकास की अवधारणा के लिए अवधारणा बनाने के महत्व का भी सुझाव दिया है।

एच. विल्सन और जे. वेन्स 2001 ने अपने लेख ग्रामीण पर्यटन विकास में सफलता के कारक में ग्रामीण समुदाय के आर्थिक विकास में ग्रामीण पर्यटन की भूमिका पर प्रकाश डाला है। उन्होंने ग्रामीण पर्यटन को ग्रामीण समुदाय के आर्थिक विकास में देखा है। उन्होंने देखा है कि स्थानीय सरकार और लोगों की सक्रिय भागीदारी से ग्रामीण पर्यटन आसानी से विकसित हो सकता है। उन्होंने कई कारकों का संकेत दिया है जैसे पर्यटन पैकेज, अच्छा नेतृत्व, स्थानीय सरकार का समर्थन, धन, रणनीतिक योजना, स्थानीय लोगों के बीच समन्वय और पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए तकनीकी सहायता आदि जो ग्रामीण पर्यटन विकास के लिए आवश्यक हैं। लेखकों ने यह भी देखा है कि ग्रामीण पर्यटन विकास। लेखकों ने यह भी देखा है कि ग्रामीण पर्यटन विशाल प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग करते हुए ग्रामीण क्षेत्रों में स्थानीय लोगों को आय और रोजगार के अवसर प्रदान करता है।

आर मिश्रा 2000 ने तीर्थयात्रा पर्यटन – ब्रजमंडल का एक केस स्टडी शीर्षक से अपनी थीसिस में कहा है कि शहरी वर्ग की बढ़ती गतिशीलता के साथ, अधिक से अधिक लोग सप्ताहांत यात्राएं कर रहे हैं। अध्ययन में खराब बुनियादी ढांचे और सुविधाओं जैसे आवास, गुणवत्तापूर्ण भोजन, खरीदारी के क्षेत्र, सार्वजनिक सुविधा, और संचार और धोखाधड़ी और गुमराह करने आदि की मुख्य समस्याओं पर भी प्रकाश डाला गया है। लेखक ने कानूनों के अनुसार पर्यटन का पुनर्गठन, पर्यटन विकास के प्रबंधन में व्यवस्थित दृ ष्टिकोण की आवश्यकता, स्वस्थ तरीके से पर्यटकों के साथ बातचीत और गैर–सरकारी संगठन की सहायक भूमिका और पर्यटन विकास के लिए रणनीति जैसे परिचालन उपायों जैसे परिचालन उपायों के निर्माण जैसे परिचालन उपायों का सुझाव दिया है। तीर्थ पर्यटन की गति को बढ़ाने के लिए वेटिकन सिटी की तर्ज पर क्षेत्र के लिए एक विकास बोर्ड और निर्माण।

जीएस बत्रा और आरसी डंगवाल 2001 ने अपनी पुस्तक ष्पर्यटन संवर्धन और विकासष में देखा है कि भारत में अपने अद्वितीय सांस्कृतिक और प्राकृतिक आकर्षणों के कारण पर्यटन की अपार संभावनाएं हैं। क्षमता का पूरी तरह से दोहन नहीं किया गया है और इस दिशा में जो भी प्रयास किए गए हैं, वे उम्मीद के मुताबिक नहीं हुए हैं।" उन्होंने भारत पर्यटन में और अधिक विस्तार की खोज की है।

ओपी कंडारी और आशीष चंद्र 2004 ने अपनी पुस्तक पर्यटन विकास सिद्धांत और व्यवहार में उल्लेख किया है कि योजना और मूल्यांकन किसके सतत विकास के महत्वपूर्ण भाग हैं पर्यटन। उन्होंने पर्यटन विकास के मुद्दों पर विशेष रूप से आर्थिक, नैतिक और पर्यावरण के दृष्टिकोण से ध्यान केंद्रित किया है और प्रभावी पर्यटन प्रथाओं के लक्ष्यों और रणनीतियों की व्याख्या की है और क्षमता और सामुदायिक भागीदारी के प्रमुख मुद्दों की पहचान की है। उन्होंने यह भी कहा है कि ग्रामीण विकास में पर्यटन की भूमिका मौलिक रूप से आर्थिक है और ग्रामीण क्षेत्रों में जीवन की गुणवत्ता को बनाए रखने और सुधारने में मदद कर सकती है।

विनोद एवं अश्वनी (2013) ने पता लगाया आध्यात्मिक अथवा तीर्थ पर्यटन एक ही सिक्के के दो पहलू है, तीर्थयात्रा को पर्यटन से अलग कि आध्यात्मिक अथवा धार्मिक एवं तीर्थ पर्यटन करके आध्यात्मिक पर्यटन की अवधारणा को का इस प्रकार से विकास करना चाहिए कि यह एक दिन हमारे देश की अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार बन सके । हम अपने देश के घरेलू पर्यटन को चीन की तरह बढाकर आय के मुख्य स्रोत पैदा कर सकते हैं ।

जोरास्टिर्चन, रनसीमन (1987) जो भावनाएं प्रचीन समय में तीर्थयात्राओं को प्रेरित करती थी । वह आजकल कम प्रभाव के साथ प्रेरित करती है । जबकि वियूकोनिस (1998) के अनुसार, पर्यटन अनुसंधान के क्षेत्र में आध्यात्म एक बहुत महत्वपूर्ण क्षेत्र हो सकता है । लॉयड (1998) यह मानते हैं कि आधुनिक युग में पर्यटन के विकास में आध्यात्मिकता का होना भी पर्यटन में वृद्धि का एक संयोग मात्र है ।

राधिका कपूर (2018) ने भारत में धार्मिक पर्यटन का परिप्रेक्ष्य, भारत में धार्मिक पर्यटन का विकास, धार्मिक पर्यटन की विशेषताएं और धार्मिक पर्यटन के विकास में अनुभव किए जाने वाले मुद्दों पर ध्यान दिया है। उनके अनुसार पूरे देश में न केवल धनी व्यक्तियों बल्कि कम आय वर्ग और समाज के आर्थिक रूप से कमजोर तबकों के लोग भी धार्मिक पर्यटन का आनंद लेते हैं । इस शोध के दौरान दोनों लेखकों ने पाया कि ऐसे भी बहुत से विशेष धर्म स्थान देखे गए जहां पर वहां के प्रबंधन द्वारा यात्रियों के ठहरने आदि के लिए (उदाहरण के तौर पर) धर्मशाला अथवा यात्री विश्राम गृहों जैसी कुछ साधारण सुविधाएं भी उपलब्ध कराई जाती है। ऐसे स्थानों के आसपास कुछ अमीर लोग या कोई ट्रस्ट ६ समिति भी धर्मशाला उपलब्ध कराते हैं। इन स्थानों पर आने वाले पर्यटक यात्री आसपास के विश्राम गृहों कैफे या दुकानों का ही उपयोग करते रहे हैं

धार्मिक स्थल और धार्मिक यात्रा

संसार समुद्र से पार होने की कला जहाँ पर सीखने को मिलती है, वे स्थल तीर्थ कहलाते हैं। मनुष्य सामाजिक प्राणी होते हुए भी स्व पर कल्याण की भावना से निहित होता है और इस पुनीत भावना से वह अचेतन तीर्थों का निर्माण करता है। श्रमण स्वयं को तीर्थ बनाते हुए स्व पर कल्याण की भावना से निहित होते हुए तीर्थों के निर्माण का उपदेश मात्र देते हैं, आदेश नहीं देते, न ही स्वयं स्वयं भू बनकर पूर्ण जिम्मेदारी अपने ऊपर लेते हैं। तीर्थ स्थल पवित्रता, शांति एवं कल्याण के धाम होते हैं।

हमारे ऋषि–मुनि मानवी मनोविज्ञान के कुशल मर्मज्ञ यानी कि जानकार होते थे। प्राचीन ऋषि–मुनि लिबास से भले ही साधु–संत थे, किंतु सोच और कार्यशैली से पूरी तरह से वैज्ञानिक थे। दुनिया को मोक्ष का मार्ग वैदिक ऋषियों ने ही बताया। दुनिया के किसी भी धर्म की अंतिम मान्यता यही है कि आत्मज्ञान या पूर्णता की प्राप्ति ही इंसानी जिंदगी का एकमात्र अंतिम ध्याय यानी कि मकसद है। धरती पर पहली बार वैदिक ऋषियों ने धर्म को एक व्यवस्था दी और वैज्ञानिक विधि–विधान निर्मित किए। दुनिया के बाद के धर्मों ने उनकी ही व्यवस्था और धार्मिक विधि–विधान को अपनाया। उन्होंने संध्यावंदन, व्रत, वेदपाठ, तीर्थ, 24 संस्कार, उत्सव, यम–नियम, ध्यान आदि को निर्मित किया और इसे धर्म का आधार स्तंभ बनाया। उनके ही बनाए संस्कारों और नियमों को आज सभी धर्म के लोग अपना रहे हैं। धर्म के इन्हीं नियमों में से एक है– तीर्थयात्रा।

तीर्थ धार्मिक और आध्यात्मिक महत्त्व वाले स्थानों को कहते हैं जहाँ जाने के लिए लोग लम्बी और अकसर कष्टदायक यात्राएँ करते हैं। इन यात्राओं को तीर्थयात्रा (चपसहतपउंहम) कहते हैं। हिन्दू धर्म के तीर्थ प्रायः देवताओं के निवास–स्थान महत्त्वपूर्ण तीर्थ हैं और इसके अतिरिक्त कई तीर्थ महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक व्यक्तियों के जीवन से भी सम्बन्धित हो सकते हैं। उदाहरण स्वरूप, मास्को में लेनिन की समाधि साम्यवादियों के लिए एक तीर्थ है।

चित्र 5

भारत की सांस्कृतिक एकता को मजबूत करने हेतु आदि शंकराचार्य नें भारत के चार दिशाओं में चार धामों की स्थापना की। उत्तर में बद्रीनाथ, दक्षिण में रामेश्वरम, पूरब में जगन्नाथपुरी एवं पश्चिम में द्वारका – हिन्दुओं के चार धाम हैं। पूर्व में हिन्दू इन धामों की यात्रा करना अपना पवित्र कर्तव्य मानते थे। कालान्तर में हिन्दुओं के नये तीर्थ आते गये हैं।

धार्मिक पर्यटन, जिसे आमतौर पर विश्वास पर्यटन के रूप में भी जाना जाता है, एक प्रकार का पर्यटन है, जहां लोग तीर्थयात्रा, मिशनरी, या अवकाश (फैलोशिप) उद्देश्यों के लिए व्यक्तिगत रूप से या समूहों में यात्रा करते हैं। दुनिया में सबसे बड़ा सामूहिक धार्मिक पर्यटन भारत में कुंभ मेला तीर्थयात्रा में होता है, जो 100 मिलियन से अधिक तीर्थयात्रियों को आकर्षित करता है। उत्तरी अमेरिकी धार्मिक पर्यटकों में अनुमानित + 10 बिलियन उद्योग शामिल है।

भारत में धार्मिक पर्यटन से तात्पर्य भारत में स्थित विभिन्न धर्मस्थलों से है। भारत एक विविधताओं से भरा देश है और यहाँ कई धर्मों के लोग एक साथ रहते हैं। विभिन्न धर्मों से संबंधित विभिन्न स्थान, शहर या इमारतें भारत भर में विद्यमान हैं, जो कि मात्र धार्मिक आस्था वाले लोगों ही नहीं अपितु पर्यटकों के लिए दर्शनीय हैं। विभिन्न धर्मों के अनुसार वर्गीकृत एसे स्थानों की सूची –

चार धाम, द्वादश ज्योतिर्लिंग, इक्यावन शक्तिपीठ, वैष्णो देवी, गंगा, यमुना, सरस्वती, प्रयाग, कुम्भ, महाकुम्भ ब्रज, द्वारिका, कुरुक्षेत्र, ब्रज की होली, अयोध्या, चित्रकूट, रामेश्वरम,, पुष्कर, खजुराहो, तिरुपति, हजरतबल, अजमेर, निजामुद्दीन, फरीदकोट, हाजी अली, अमृतसर, गुरु नानक का विवाह (बटाला), आनंदपुर साहिब, चमकौर, सरहिंद, नांदेड़, फतेह बुर्ज, शीशगंज, होला महल्ला, गोवा, गया, सारनाथ, साँची, धर्मशाला, लाहौल व स्पीति, लद्दाख, कालचक्र, श्रवणबेलगोला, पालीताणा

धार्मिक पर्यटन के अतीत, वर्तमान और भविष्य

आध्यात्मिक आस्था लम्बे समय से ही एक स्थल से दूसरे स्थलों अथवा देशों में जाने का एक विलक्षण माध्यम रही है । किसी धार्मिक स्थल की यात्रा तीर्थयात्रा कहा जाता था लेकिन अब यह मात्र एक यात्रा नहीं रही बल्कि पर्यटन का एक पर्याय बन गई है। प्राचीन काल से ही तीर्थयात्राएं करने की परम्परा देखने में आती है जिसे हम पर्यटन का सबसे पुराना स्वरूप कह सकते हैं। विश्व के विभिन्न भागों में धर्म या अध्यात्म पर आधारित पर्यटन अत्यधिक महत्वपूर्ण स्थान रखता है। जैसे कि यूरोप में लूडेंस (फ्रांस), फातिमा (सउदी अरब). मेडजूगोर्जे, बोस्निया हर्जेगोविना सउदी अरब में मक्का एवं भारत में कुम्भ, सबरीमलै, तिरूपति, सप्तायक प्रवक्ता होटल प्रबंध संस्थान गुरदासपुर (पंजाब) मनुष्य जन्म से लेकर मृत्यु पर्यन्त किसी न किसी सर्वोच्च शक्ति पर भरोसा करता है ऐसा विचार सिर्फ किसी एक विशेष पंथ या सम्प्रदाय में ही नहीं अपितु सभी धर्मों में भी पाया जाता है। मनुष्य का विश्वास है कि कोई न कोई ऐसी शक्ति जरूर है, जो इस सृष्टि का संचालन करती है। हमारा देश भारत उन देशों में से एक है जहां पर विश्व के अनेक धर्मों के लोग निवास करते हैं।

यहूदियों ने धार्मिक यात्राओं के माध्यम से अपनी भक्ति व्यक्त की । वही धार्मिक कारणों से ऐसी यात्राएं अफ्रीका और एशिया में भी मौजूद थीं । भारत, एक एकल देश के रूप में, दुनिया के सभी धर्मों के लिए असंख्य तीर्थ स्थलों का दावा कर सकता है । देश की धर्मनिरपेक्ष प्रकृति के कारण यहां सभी धर्मों के लिए तीर्थस्थल बहुतायत में मौजूद है । पर्यटन के रूप में तीर्थयात्रा सभी धर्मों के सापेक्ष में भारत में बहुत लोकप्रिय है । इन सब के बावजूद, यह भी एक तथ्य है कि आजकल अधिकतर लोग स्वयं को धर्मनिरपेक्ष मानते हैं । परन्तु अब परिस्थितियां बदलती जा रही हैं । तीर्थों पर जाने वाले यात्री, अब इसे तीर्थ नहीं मानते, उनके लिए अब आस्था का स्थान मात्र बन गए हैं । इसीलिए अब वह उस स्थान पर एक दो दिन रुकने के लिए अच्छी सुविधाओं की आशा करने लगे हैं । वह उम्मीद करते हैं कि आसपास अच्छे होटल, रेस्तरां और आवागमन के बेहतर साधन हो । उनकी इन्हीं जरूरतों को देखते हुए अब कुछेक धार्मिक स्थानों पर 4 या 5 स्टार होटल्स तक बन गए हैं । उनके ठहरने के स्थान से धार्मिक स्थल तक टैक्सियां उपलब्ध रहती है । ऐसी अवसंरचनाओं का विकास कुछेक ऐसे स्थानों पर भी देखा गया हैं, जहां महीने दो महीने में साधु – संतों के

प्रवचनों–सतसंगों आदि का आयोजन किया जाता है । एक मोटे अनुमान के अनुसार भारत सहित पूरे विश्व में आध्यात्मिक अथवा धार्मिक पर्यटन पर जाने वाले लोगों के बारे में आंकड़े सहेजने की प्रथा नहीं है । इसके लिए कुछ विशिष्ट स्थलों पर अपने यजमान पर्यटकों की संख्या आदि के अस्पष्ट अनुमान लगाए हैं । अक्तूबर–दिसम्बर, 2019 अतुल्य भारत अतिथि देवो भव भारत को शामिल करते हुए दक्षिण पूर्वी एशिया में पर्यटकों पर किए गए एक अध्ययन के अनुसार धार्मिक स्थलों पर आए पर्यटकों को निम्नप्रकार समूहों में बांटा गया है।

चित्र 6

समूह के सदस्य प्रतिशत तीर्थ स्थलों पर जाने वाले पर्यटक समूह द्य एकल रूप से जाने वाले एक पुरुष अथवा महिला (ऐसे पर्यटकों में अधिकतर यूरोप या पूर्वी एशियाई देशों के वासी होते हैं) प्राय पति–पत्नी पर्यटक केवल दो पर्यटक मित्रों के साथ ग्रुप में जाने प्रायः छात्र। इनके अलावा, निजी–सार्वजनिक वाले पर्यटक क्षेत्र के कार्मिक–किसी वरिष्ठ नागरिक क्लब के सदस्य आदि। एक परिवार के ग्रुप पर्यटक पति–पत्नी, दो–तीन बच्चे और बुजुर्ग माता पिता। वर्तमान आकड़ों के आधार पर हमारे देश का पर्यटन क्षेत्र वर्ष 2018 में देश के सकल घरेलू उत्पाद (ळक्च्) में 9.2 प्रतिशत का योगदान रखता है तथा कुल रोजगार के 8.1प्रतिशत अवसर का इसी क्षेत्र से रहे हैं । एक अनुमान के अनुसार, आध्यात्मिक पर्यटन से भविष्य में आय व्यक्तियों का समूह ही तीर्थ एवं अन्य धार्मिक स्वीकार करना मुश्किल काम है, क्योंकि धार्मिक स्थलों की यात्रा करता है। आध्यात्मिकता के आधार पर हम देश की संस्कृति एवं भाई–चारे को एक मंच पर लाने में मुख्य भूमिका अदा कर सकते हैं क्योंकि सभी धर्मों का उद्देश्य एक ही होता है आपसी भाईचारा यह भाईचारा केवल तीर्थ एवं धार्मिक पर्यटन स्थलों को विकसित करके ही प्राप्त किया जा सकता है । अतिथि देवो भव एवं रोजगार में 15 से 20 प्रतिशत तक वृद्धि की जा सकती है ।

पर्यटन को प्रभावित करने वाले तत्व

- प्राकृतिक आपदायें जैसे दावाग्नि, भूस्खलन, त्वरित बाढ़, जंगली जानवरों का प्रकोप, बादल फटना, जैसी घटनायें
- सड़कों का निर्माण व रखरखाव ना होना जिस कारण क्षेत्र में भ्रमण करना सुगम नही है।
- रात्री विश्राम के लिये निजी या सार्वजनिक आवास, धार्मषाला, लॉज आदि की कमी
- भाशा से सम्बधित समस्या जिस कारण पर्यटकों को असुविधा होती है
- उचित दाम पर गाइड़ों की उपलब्धता न होना
- स्थानीय लोगों के द्वारा पर्यटकों को अधिक दामों पर वस्तुऐं उपलब्ध करवाना
- क्षेत्र में पर्यटन विकास के लिए सरकार की उदासीनता आदि प्रमुख कारक हैं।

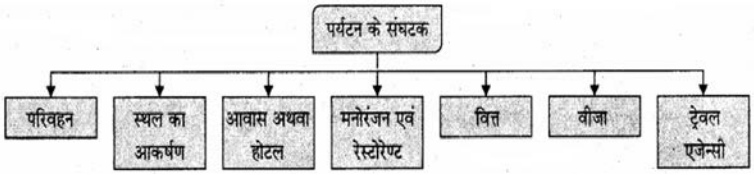

चित्र 7

सुझाव

- तीर्थ पर्यटन के क्षेत्रों को चिन्हित कर उनका जीर्णोद्धार कर उन्हें वैश्विक पर्यटन मानकों के आधार पर विकसित किया जाना चाहिए । इससे घरेलु पर्यटकों के साथ–साथ विश्व के पर्यटकों को आकर्षित किया जा सकेगा ।
- जीर्णशीर्ण हुए धार्मिक क्षेत्रों में पुनः मूलभूत सुविधाएं प्रदान कर पर्यटकों को आकर्षित करने के लिए उनकी विशेषताओं आदि का प्रचार किया जा सकता है ।
- उपेक्षित तीर्थ स्थलों के उन्नयन हेतु सरकार अपने बजट से कुछ धनराशि आवंटित कर ऐसे तीर्थ स्थलों का विकास कर सकती है ।

- तीर्थ स्थलों पर यातायात एवं यात्रियों के ठहरने आदि की पूर्ण व्यवस्था का दायित्व सम्बन्धित राज्य सरकार अथवा उसके द्वारा बनाए गए ट्रस्ट आदि का होना चाहिए ताकि ऐसे पर्यटकों को उचित मूल्यों पर सुविधाएं मिल सकें क्योंकि यह देखने में आता है कि ऐसे स्थानों पर निजी क्षेत्र के सुविधा प्रदाता सेवाओं के लिए मानमाने और कहीं–कहीं तो बाजार से से दो–तीन गुनी असामान्य दरें वसूलते हैं ।
- तीर्थ यात्रियों की सुरक्षा व्यवस्था एवं प्राथमिक स्वास्थ्य व्यवस्था आदि की तैयारी किसी भी उत्सव से पूर्व ही पूर्ण कर ली जानी चाहिए ।
- पासपोर्ट एवं कर व्यवस्था को आसान एवं सुगम बनाया जाए । जिससे कि पर्यटक सुगमता से यात्रा कर सकें । तीर्थ स्थानों पर स्थित होटलों–विश्रामगृहों आदि को करों में कुछ छूट के साथ वहां ठहरने वाले पर्यटकों को भी कुछ रियायतें दी जानी चाहिए ।
- तीर्थ–स्थलों पर सतत विकास एवं पर्यटन स्थल की वहनीय क्षमता के आधार पर ही पर्यटकों के आगमन, रहने एवं ठहरने की व्यवस्था की अनुमति प्रदान करनी चाहिए ।

निष्कर्ष

आज के आधुनिक युग में मानव आधुनिक आवश्यकताओं की पूर्ति के कारण अवसाद एवं मानसिक रोगों से घिर गया है । शान्ति एवं शकुन के कुछ क्षणों के लिए वह ऐसे किसी तीर्थ स्थल और साथ उसके आसपास के अन्य स्थानों पर जाकर पुनः ऊर्जा की अनुभूति करना चाहता है । अब जब करतारपुर गुरुद्वारे के दर्शन करने के लिए कोरिटोर खोल दिया गया है तब ऐसे में गुरदासपुर में पर्यटन में आश्चर्यजनक वृद्धि होने की सम्भावना है क्योंकि ऐसे पर्यटक स्थानीय धार्मिक स्थलों के दर्शन करने के लिए भी अपने कार्यक्रम बनाते हैं

धार्मिक पर्यटन राज्य के सामाजिक–आर्थिक विकास में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह सांस्कृतिक विविधता, आध्यात्मिकता को बढ़ावा देता हैय विदेशी मुद्रा लाना रोजगार के अवसर प्रदान करता है और जनता को अपने मूल्यों, संस्कृतियों, परंपराओं और जीवन जीने के तरीके का परस्पर आदान–प्रदान करने के लिए प्रोत्साहित करता है। इसके अलावा यह विदेशी संबंधों को बनाए रखने में देशों की सॉफ्ट पावर के प्रबंधन में मदद करता है। भारत में धार्मिक पर्यटन विविध और सांस्कृतिक रूप से समृद्ध रहा है। भारत में सबसे अधिक देखे जाने वाले धार्मिक पर्यटन स्थल तमिलनाडु, उत्तर प्रदेश, आंध्र प्रदेश, मध्य प्रदेश और कर्नाटक राज्य हैं। भारत सरकार ने पर्यटन को प्रोत्साहित करने, बढ़ावा देने और विकसित करने के लिए कई पहल की हैं।

इसके अलावा, भारत में पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए पर्यटन पर्व का उत्सव मनाया जाता है, जिसके तीन घटक हैं, अर्थात् देखो अपना देश अर्थात भारतीयों को अपने देश की यात्रा के लिए प्रोत्साहित करने के लिए, सभी के लिए पर्यटन अर्थात सभी राज्यों में पर्यटन संबंधी गतिविधियों को बढ़ावा देना। देश और पर्यटन और शासनष यानी हितधारकों को समावेशी तरीके से विचार करके पर्यटन के शासन पर ध्यान केंद्रित करना महत्वपूर्ण कदम हैं।

इस प्रकार यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि धार्मिक पर्यटन को राज्य के समावेशी सामाजिक–आर्थिक विकास का एक प्रमुख चालक माना जा सकता है। उचित नीतिगत हस्तक्षेपों के माध्यम से इस क्षेत्र पर और जोर देने से जीवन के कई पहलुओं में विविधता वाले क्षेत्रों को एकीकृत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने की उम्मीद है।

संदर्भ सूची

1. खरे, ऋचा. (2010), उत्तराखण्ड के आर्थिक विकास में पर्यटन स्थलों का योगदान, पर्यटन भूगोल में एक अध्ययन, शोध ग्रन्थ. हे.न.ब.ग.वि. विद्यालय.
2. नेगी, चन्दन. (2008). पर्यटन विकास के सन्दर्भ में गैरसैण क्षेत्र का भू आकृतिक अध्ययन, शोध ग्रन्थ. हे.न.ब.ग.वि.विद्यालय.
3. जोशी, शिव दयाल. (1995),सहस्त्रताल, उत्तराखण्ड प्रिन्टर्स, नई दिल्ली–15
4. सिहं, भूदेव.एवं राजपूत, हरीश कूमार, 2014, भारत में पर्यटन उद्योग की प्रगति एवं समस्यायें, रुहेलखण्ड भौगोलिक शोध पत्रिका, अंक 16,पृ. 75–80
5. रावत .मीनाक्षी, (2008), जनपद उत्तरकाशी में पर्यटन विकास, वर्तमान परिदृश्य, समस्याऐं एवं सम्भावनाऐं, शोध ग्रन्थ. हे.न.ब.ग.वि.विद्यालय.
6. सिहं. अरुण, (2007), अवध परिक्षेत्र में पर्यटन विकास की सम्भावनाऐंः एक भौगोलिक विश्लेषण, शोध ग्रन्थ
7. लाल.बचन, (2007), पश्चिमी उत्तरांचल के क्षेत्रीय विकास के लिए पर्यटन संसाधनों का भौगोलिक विश्लेषण
8. Raj Dev. Eco Tourism in Himachal Pradesh – A Geographical Analysis. Ph.D. thesis, 2007.
9. Bhatt R. “Geographic Appraisial of Tourism Potential in Uttaranchal and Planning for Economic Development” Ph.D. thesis, 2007.
10. Rawat BBS. “Garhwal : A geographical Study of Tourism with special Emphasis on Recent Development” Ph.D. thesis, 1991.
11. Bisht H, Chauhan RS. Eco-tourism for Garhwal Himalaya in Central Himalaya Environment and Development Potential Action and challenges, Editor M.S.S. Rawat. Dept. of Geography’ H.N.B.G.U, 2006.
12. Kumar R, Chauniyal DD, Dutta S. “Demographic Profile of The Kumaun Himalaya (Uttarakhand)”. “Research stetegy” A National Research journalof Geography & Environmental Thought,2016:6:80-83.
13. Singh D, Kumar R. “Hkkjrh; ifjizs{k esa tutkrh; tul[;ka dk fodkl” Indian Stream research Journal, International Recognition Multidisciplinary Research journal, 2016, 1-6
14. Scott N. Tourism policy: A strategic Review, Goodfellow Publishers Limited, Woodeaton, Oxford, OX39TJ, 2011.
15. Tourism policy by Government of India, Internet, Google Earth.
16. स्थानीय सामाचार पत्र व पत्रिकाएं